जल ही जीवन है

"जल ही जीवन है" यह अवधारणा हिन्दू धर्मसंस्कृति की रही है। - भारतीय दृष्टि के अनुसार जीव सृष्टि का क्रमिक विकास जल से ही प्रारम्भ माना गया है। इसका दर्शन सनातन धर्म के अवतारवाद की परम्परा में दृष्टिगोचर भी होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वत्र जल ही था। जल में जीवन की सम्भावना मत्स्य के अन्दरही सम्भावित थी। प्रथम अवतार के रूप में 'मत्स्य अवतार' माना गया है। पूरी दुनियाँ में नदियों को ही जल का स्थायी स्रोत माना गया है। हमारे देश भारत में नदियाँ जल की स्रोत ही नहीं थीं अपितु उससे भी आगे जाकर प्राचीन भारत में गाँव व बस्तियाँ नदी तट पर बसी थीं। जहाँजहाँ नदी तट वहीं - तीर्थ बन गये। नदियाँ इस देश के वैभव की प्रतीक थीं, साधन थीं और स्वाभिमान भी थीं। नदियाँ सुगम जलमार्ग एवं व्यापारिक आवागमन का सम्पर्क मार्ग थीं तो धर्म एवं कृषि प्रधान भारत की जीवनदायिनी रेखा भी थीं। बावजूद इसके आज नदियाँ मर रही हैं और पूरा देश सो रहा है। हमारी तो सभ्यता ही नदी सभ्यता है। सिन्धु नदी थी जिसके कारण भारत पहले सिन्धु स्थान और कालान्तर में हिन्दुस्थान कहलाया। ये पवित्र नदियाँ धार्मिक दृष्टि से हमारे लिए पूजनीय रही हैं; विश्व मानवता की जन्मदात्री और धात्री भी रही हैं। सम्पूर्ण विश्व के अन्दर जहाँ कहीं सभ्यतासंस्कृति का विकास हुआ वह नदियों के तटवर्ती क्षेत्र ही रहे हैं अर्थात् - नदियाँ भारत के लिए जीवन की गति, प्रगति एवं सद्गति की प्रेरणास्रोत रही हैं। इसीलिए तो भारत जैसे धर्मप्राण देश में प्रत्येक सनातन धर्मानुयायी प्रातःकाल जब स्नान करता है तो देश की सात प्रमुख पवित्र नदियों का स्मरण कर राष्ट्र की एकता और अखण्डता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए बरबस कह उठता है-

गंगे च यमुनेचैव, गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी, जलेऽस्मिन सन्निधिमकुरु।।

भारत का वैदिक साहित्य नदियों की स्तुति से भरा पड़ा है। लेकिन इस सब के बावजूद आज न केवल विश्व की एक दर्जन से ऊपर बड़ी नदियाँ घोर प्रदूषण के कारण अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही हैं अपितु भारत जैसे धर्मप्रधान एवं कृषि प्रधान देश में गंगा जैसी पवित्र एवं मोक्षदायिनी नदी समेत अधिकतर छोटीबड़ी- नदियों का अस्तित्व भी औद्योगिक विकास के नाम पर लगे उद्योग के कचरे तथा महानगरीय सीवेज तथा नालों की गन्दगी के कारण खतरे में पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। जब गंगा जैसी पवित्र नदी जिसे मात्र नदी नहीं भारत के श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक माना गया हो, का भी अस्तित्व खतरे में पड़ा दिखाई दे तो यह खतरा सामान्य नहीं हो सकता। यही स्थिति यूरोप के अन्दर भी थी। पर्यावरण की दृष्टि से ही सही यूरोप के अन्दर सरकारें जागीं। सरकार, स्वयं सेवी संगठन तथा आम जन के कारण आज यूरोप की अधिकतर नदियाँ प्रदूषण से मुक्त हैं। सन् म 1980ें भारत की पवित्र नदी गंगा की स्थिति एवं महत्त्व को देखकर गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए तत्कालीन केन्द्र सरकार ने 'गंगा एक्शन प्लान' बनाया जिसमें हरिद्वार से गंगासागर तक के जल को प्रदूषण मुक्त करना था, लेकिन इसका सबसे दुःखद पहलू यह रहा कि न तो केन्द्र सरकार, न राज्य सरकार, न स्वयं सेवी संगठनों और न ही आम जन की भागीदारी गंगा की पवित्रता को बनाये रखने में रुचि ले पाई। एक हजार करोड़ रु) .रु .1000 करोड़(खर्च होने के बावजूद भारत की प्राणदायिनी ''गंगा'' ज्यों की त्यों मैली पड़ी है। 'गंगा एक्शन प्लान' की असफलता का कारण धनाभाव नहीं था। समयबद्ध गुणवत्तायुक्त कार्य न होने से किया गया अधूरा कार्य भी व्यर्थ साबित हुआ। रही सही कसर टिहरी बाँध जैसी परियोजनाओं ने पूरा कर दिया। इस सबके बावजूद न सरकारें चेत रही हैं न स्वयं सेवी संगठन ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं और न ही आम जन ही जागरूक हो पा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार की लापरवाही की हद तो यहाँ तक है कि गंगा के अस्तित्व को समाप्तप्राय करने के लिए उसने 'गंगा एक्सप्रेस वे' जैसी जनविरोधी एवं पर्यावरण विरोधी परियोजनाओं को मंजूरी देने में

कोई कोताही नहीं बरती। औद्योगिक कचरा, अनियंत्रित एवं अवैज्ञानिक विकास की देन प्लास्टिक कचरों से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से बहने वाली यमुना नदी भी घोर प्रदूषण से बच नहीं पाई है। भारत की धर्मप्रधान और कृषि प्रधान व्यवस्था की रीढ़ नदियाँ मर रही हैं। पूरा देश सो रहा है। यह दुःखद स्थिति है। समय आ गया है जब हम भारत की जीवनदायिनी नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए संकल्पित हों क्योंकि ये नदियाँ भारत की पहचान हैं, भारत की आस्था भी हैं। जब भी आस्था और पहचान के साथ खिलवाड़ होगा तो वह अस्तित्व के साथ खिलवाड़ ही माना जायेगा। इसलिए संकल्प लें कि औद्योगिक इकाई का कचरा एवं जहरीला पानी अपनी पवित्र नदियों में नहीं जाने देंगे। प्लास्टिक का कचरा भी पवित्र नदियों में नहीं डालने देंगे, किसी शव को अथवा कर्मकाण्ड के नाम पर भी पवित्र नदियों को अपवित्र नहीं होने देंगे। तभी भारत की नदी संस्कृति बचेगी और तभी भारतीय संस्कृति भी अक्षुण्ण रहेगी। आखिर जल ही तो जीवन है।